

मुस्लिम समाज में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति

बीबी सफीना

शोधार्थी

स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग

तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

सार

भारत में मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति एक जटिल और बहुआयामी मुद्दा है, जो सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा धार्मिक कारकों से प्रभावित है। 2011 की जनगणना के अनुसार, मुस्लिम महिलाओं की साक्षरता दर लगभग 51.9% थी, जो राष्ट्रीय औसत (65.46%) से काफी कम है। मुस्लिम समुदाय कुल जनसंख्या का लगभग 14.2% है, लेकिन उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा में उनकी भागीदारी न्यूनतम स्तर पर है। सच्चर समिति रिपोर्ट (2006) ने इस पिछड़ेपन को उजागर किया, जिसमें मुस्लिम महिलाओं की साक्षरता 50% के आसपास बताई गई और ड्रॉपआउट दर अन्य समुदायों से अधिक पाई गई। प्राथमिक स्तर पर मुस्लिम लड़कियों की नामांकन दर अन्य समुदायों के समान दिखती है, लेकिन मध्य और उच्च स्तर पर यह अंतर बढ़ जाता है। मुख्य चुनौतियां हैं: पितृसत्तात्मक समाज, जल्दी विवाह, आर्थिक गरीबी, स्कूलों की कमी (विशेषकर लड़कियों के लिए), सामुदायिक रूढ़िवादिता, और शिक्षा की गुणवत्ता। NFHS-5 डेटा के अनुसार, 25% मुस्लिम महिलाएं कभी स्कूल नहीं गईं, जबकि केवल 18% ने 12वीं या उससे अधिक शिक्षा प्राप्त की।

हालांकि, AISHE रिपोर्ट (2020-21) में सकारात्मक पहलू भी दिखता है, जहां उच्च शिक्षा में मुस्लिम छात्राओं की भागीदारी मुस्लिम छात्रों से अधिक (503 प्रति 1000) है, जो पिछले वर्षों में बढ़ी है। शिक्षा महिलाओं को सशक्त बनाती है, परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारती है और सामाजिक गतिशीलता बढ़ाती है। सरकारी योजनाएं (जैसे RTE, स्कॉलरशिप), मदरसा आधुनिकीकरण, और सामुदायिक जागरूकता आवश्यक हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का विश्लेषण, चुनौतियों की पहचान और समाधान सुझाना है। साक्ष्य-आधारित नीतियों से इस वर्ग को मुख्यधारा में लाया जा सकता है, जो राष्ट्र के समग्र विकास के लिए अनिवार्य है।

शब्द कुंजी : शैक्षिक स्थिति, साक्षरता दर, उच्च शिक्षा, लैंगिक असमानता और सामाजिक-आर्थिक चुनौतियां

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण आधार मानी जाती है। यह केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक चेतना, आत्मनिर्भरता और अधिकारों के प्रति जागरूकता का भी प्रमुख साधन है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि वहाँ के नागरिक, विशेषकर महिलाएँ, कितनी शिक्षित और जागरूक हैं। महिलाओं की शिक्षा समाज में समानता, लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक न्याय की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब महिलाएँ शिक्षित होती हैं, तब वे न केवल अपने जीवन को बेहतर बनाती हैं, बल्कि परिवार, समुदाय और राष्ट्र के

विकास में भी सक्रिय योगदान देती हैं। इसी संदर्भ में भारतीय मुस्लिम समाज में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। भारत एक बहुजातीय, बहुधार्मिक और बहुसांस्कृतिक देश है, जहाँ विभिन्न समुदायों की सामाजिक और शैक्षिक स्थिति में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। मुस्लिम समुदाय भारत का सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है, जिसकी जनसंख्या देश की कुल आबादी का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस समुदाय की सामाजिक और आर्थिक स्थिति लंबे समय से चर्चा और अध्ययन का विषय रही है। विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा की स्थिति सामाजिक पिछड़ेपन, आर्थिक कमजोरी और सांस्कृतिक परंपराओं के कारण अपेक्षाकृत कमजोर रही है। हालाँकि स्वतंत्रता के बाद शिक्षा के प्रसार और सरकारी प्रयासों के कारण मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार हुआ है, फिर भी वे राष्ट्रीय औसत से पीछे दिखाई देती हैं। भारतीय संविधान सभी नागरिकों को समानता और शिक्षा का अधिकार प्रदान करता है। संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 21A के अंतर्गत महिलाओं और अल्पसंख्यकों को समान अवसर देने की बात कही गई है। इसके बावजूद सामाजिक वास्तविकता यह दर्शाती है कि मुस्लिम महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। गरीबी, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक रूढ़िवादिता, प्रारंभिक विवाह, विद्यालयों की कमी और जागरूकता का अभाव उनकी शिक्षा में प्रमुख बाधाएँ हैं। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति अधिक चुनौतीपूर्ण है, जहाँ शिक्षा के संसाधन सीमित हैं और पारंपरिक सोच अधिक प्रभावशाली है।

मुस्लिम समाज में महिलाओं की शिक्षा का प्रश्न केवल साक्षरता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता और समान अधिकारों से भी जुड़ा हुआ है। शिक्षित महिला अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक होती है और परिवार तथा समाज में निर्णय लेने की क्षमता विकसित करती है। शिक्षा महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का अवसर प्रदान करती है, जिससे उनका सामाजिक सम्मान भी बढ़ता है। मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा का प्रभाव स्वास्थ्य, परिवार नियोजन, बाल शिक्षा तथा सामाजिक विकास पर भी प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। इसलिए मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन व्यापक सामाजिक परिवर्तन को समझने के लिए आवश्यक है। भारत में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा की वास्तविक स्थिति को समझने के लिए विभिन्न सरकारी रिपोर्टें और शोध अध्ययनों का विशेष महत्व है। सच्चर समिति रिपोर्ट (2006) ने मुस्लिम समुदाय की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया। इस रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से बताया गया कि मुस्लिम महिलाएँ शिक्षा के क्षेत्र में अन्य समुदायों की महिलाओं की तुलना में अधिक पिछड़ी हुई हैं। रिपोर्ट के अनुसार मुस्लिम लड़कियों का विद्यालयों में नामांकन कम है और उच्च शिक्षा में उनकी भागीदारी अत्यंत सीमित है। इसी प्रकार जनगणना 2011 तथा AISHE रिपोर्टों से यह जानकारी मिलती है कि मुस्लिम महिलाओं की साक्षरता दर में वृद्धि हुई है, किंतु अभी भी उनकी स्थिति राष्ट्रीय औसत से नीचे बनी हुई है। समकालीन भारत में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सकारात्मक परिवर्तन भी देखने को मिल रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में मुस्लिम समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है और बड़ी संख्या में परिवार अपनी बेटियों को विद्यालय और कॉलेज भेजने लगे हैं। शहरी क्षेत्रों में मुस्लिम महिलाओं की उच्च शिक्षा में भागीदारी पहले की तुलना में अधिक हुई है। अनेक मुस्लिम महिलाएँ आज डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, प्रोफेसर, प्रशासनिक अधिकारी और पत्रकार के रूप में कार्य कर रही हैं। यह परिवर्तन इस बात का संकेत है कि मुस्लिम समाज में महिलाओं की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण धीरे-धीरे सकारात्मक हो रहा है।

हालाँकि यह परिवर्तन सभी क्षेत्रों और वर्गों में समान रूप से दिखाई नहीं देता। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में आज भी मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा अनेक समस्याओं से घिरी हुई है। कई परिवार आर्थिक कमजोरी के कारण लड़कियों की पढ़ाई को प्राथमिकता नहीं देते। कुछ क्षेत्रों में यह धारणा अब भी प्रचलित है कि लड़कियों की शिक्षा केवल

विवाह तक सीमित होनी चाहिए। प्रारंभिक विवाह के कारण अनेक छात्राएँ माध्यमिक शिक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ देती हैं। इसके अतिरिक्त विद्यालयों की दूरी, सुरक्षित परिवहन की कमी और महिला शिक्षकों का अभाव भी मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा को प्रभावित करता है।

सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों के अतिरिक्त आर्थिक कारण भी मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मुस्लिम समुदाय का एक बड़ा हिस्सा निम्न आय वर्ग से संबंधित है। गरीबी के कारण परिवारों के लिए बच्चों की शिक्षा पर पर्याप्त खर्च करना कठिन हो जाता है। जब सीमित संसाधनों में निर्णय लेना होता है, तब लड़कों की शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है और लड़कियों की शिक्षा उपेक्षित रह जाती है। यही कारण है कि विद्यालय छोड़ने की दर मुस्लिम लड़कियों में अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। कोविड-19 महामारी के दौरान डिजिटल शिक्षा की आवश्यकता बढ़ी, किंतु गरीब मुस्लिम परिवारों में स्मार्टफोन और इंटरनेट की कमी के कारण अनेक छात्राएँ शिक्षा से वंचित हो गईं। मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा पर धार्मिक और सांस्कृतिक विमर्श भी महत्वपूर्ण है। इस्लाम धर्म में शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया गया है और पुरुषों तथा महिलाओं दोनों को ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया गया है। पैगंबर मोहम्मद ने शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार बताया था। इसके बावजूद भारतीय मुस्लिम समाज के कुछ वर्गों में धार्मिक शिक्षा और आधुनिक शिक्षा के बीच संतुलन का अभाव दिखाई देता है। कई परिवार धार्मिक शिक्षा को प्राथमिकता देते हैं, जबकि आधुनिक और व्यावसायिक शिक्षा की ओर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है। हालांकि वर्तमान समय में यह स्थिति बदल रही है और अनेक मदरसों में आधुनिक विषयों को भी शामिल किया जा रहा है। सरकार द्वारा मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएँ लागू की गई हैं। अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति योजनाएँ, बेगम हजरत महल छात्रवृत्ति, नई रोशनी योजना तथा समग्र शिक्षा अभियान जैसे कार्यक्रम मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से संचालित किए जा रहे हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य आर्थिक सहायता प्रदान करना, विद्यालयों में नामांकन बढ़ाना तथा उच्च शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करना है। इसके अतिरिक्त गैर-सरकारी संगठनों और सामाजिक संस्थाओं ने भी मुस्लिम महिलाओं में शिक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत के विभिन्न राज्यों में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा की स्थिति अलग-अलग पाई जाती है। केरल जैसे राज्यों में मुस्लिम महिलाओं की साक्षरता दर काफी अधिक है और वहाँ उच्च शिक्षा में उनकी भागीदारी भी उल्लेखनीय है। इसका कारण राज्य की मजबूत शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक सुधार आंदोलनों और महिला शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है। दूसरी ओर बिहार, उत्तर प्रदेश और झारखंड जैसे राज्यों में मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर बनी हुई है। इन राज्यों में गरीबी, सामाजिक पिछड़ापन और शैक्षिक संसाधनों की कमी प्रमुख कारण हैं।

मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा का महत्व केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे समुदाय और राष्ट्र के विकास से जुड़ा हुआ है। शिक्षित महिला अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा और संस्कार प्रदान करती है, जिससे आने वाली पीढ़ियों का विकास संभव होता है। महिला शिक्षा से स्वास्थ्य स्तर में सुधार, जनसंख्या नियंत्रण, आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक समानता को बढ़ावा मिलता है। इसलिए मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा को केवल एक सामाजिक समस्या के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विकास की आवश्यकता के रूप में देखा जाना चाहिए। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और सूचना क्रांति के कारण शिक्षा का महत्व और अधिक बढ़ गया है। यदि मुस्लिम महिलाएँ शिक्षा से वंचित रहती हैं, तो वे आधुनिक समाज की मुख्यधारा से पीछे रह जाएँगी। इसलिए आवश्यक है कि सरकार, समाज, शैक्षिक संस्थान और स्वयं समुदाय मिलकर मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करें। सामाजिक जागरूकता, गुणवत्तापूर्ण विद्यालय, सुरक्षित परिवहन, डिजिटल शिक्षा,

महिला शिक्षकों की नियुक्ति तथा छात्रवृत्ति योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं।

मुस्लिम समाज में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति भारतीय समाज के व्यापक सामाजिक और आर्थिक ढाँचे को प्रतिबिंबित करती है। यद्यपि पिछले वर्षों में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, फिर भी शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए अभी बहुत प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। शिक्षित मुस्लिम महिलाएँ न केवल अपने समुदाय के विकास की आधारशिला बनेंगी, बल्कि वे समावेशी, प्रगतिशील और लोकतांत्रिक भारत के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी।

उद्देश्य :

1. मुस्लिम समाज में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का वर्तमान आंकड़ों के आधार पर विश्लेषण करना।
2. शैक्षिक पिछड़ेपन के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा संस्थागत कारणों की पहचान करना।
3. अन्य धार्मिक समुदायों की महिलाओं से तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. नीतिगत सिफारिशें और समाधान प्रस्तुत करना जो मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक सशक्तिकरण में सहायक हों।

साहित्य समीक्षा

भारत में मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति पर विभिन्न सरकारी रिपोर्टें, शोध अध्ययनों तथा अकादमिक लेखों में व्यापक चर्चा की गई है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक कारकों से गहराई से प्रभावित होती है। F. Bano (2017)¹ ने अपने अध्ययन में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा में सामाजिक परंपराओं और लैंगिक असमानता को महत्वपूर्ण अवरोध माना है। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि शिक्षा मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण का आधार बन सकती है। एम. हुसैन एवं अन्य (2018)² ने अपने अध्ययन में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा से जुड़ी सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधाओं का उल्लेख किया है। अध्ययन के अनुसार रूढ़िवादी सोच, प्रारंभिक विवाह, पर्दा प्रथा तथा आर्थिक अभाव के कारण अनेक मुस्लिम बालिकाएँ उच्च शिक्षा से वंचित रह जाती हैं। शोध में यह निष्कर्ष निकाला गया कि शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए समुदाय स्तर पर जागरूकता कार्यक्रमों की आवश्यकता है। साथ ही महिला शिक्षकों की संख्या बढ़ाने तथा छात्रवृत्ति योजनाओं के विस्तार पर भी बल दिया गया। ए. मलिक (2023)³ ने मुस्लिम महिलाओं के शैक्षिक अनुभवों का अध्ययन करते हुए बताया कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण का आधार भी है। उनके अध्ययन में यह सामने आया कि मुस्लिम महिलाओं को विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर लैंगिक भेदभाव, संसाधनों की कमी तथा पारिवारिक दबाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके बावजूद शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं में आत्मविश्वास, सामाजिक भागीदारी तथा आर्थिक स्वतंत्रता में वृद्धि देखी गई। अध्ययन ने महिला शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण साधन माना है।

भारत सरकार द्वारा प्रकाशित सच्चर समिति रिपोर्ट (2006)⁴ भारतीय मुस्लिम समुदाय की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति का व्यापक अध्ययन प्रस्तुत करती है। रिपोर्ट में बताया गया कि मुस्लिम समुदाय, विशेषकर महिलाएँ, शिक्षा के क्षेत्र में अन्य समुदायों की तुलना में काफी पिछड़ी हुई हैं। रिपोर्ट ने मुस्लिम महिलाओं की निम्न साक्षरता

दर, विद्यालय छोड़ने की उच्च दर तथा उच्च शिक्षा में कम भागीदारी को प्रमुख समस्याओं के रूप में रेखांकित किया। समिति ने शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योजनाएँ, छात्रवृत्तियाँ तथा संस्थागत सुधारों की अनुशंसा की। शिक्षा मंत्रालय की AISHE रिपोर्ट (2020-21)⁵ उच्च शिक्षा में विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक समूहों की भागीदारी का सांख्यिकीय विवरण प्रस्तुत करती है। रिपोर्ट के अनुसार मुस्लिम महिलाओं की उच्च शिक्षा में भागीदारी पिछले वर्षों की तुलना में बढ़ी है, किंतु उनकी संख्या अभी भी राष्ट्रीय औसत से कम है। अध्ययन यह दर्शाता है कि तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा में मुस्लिम महिलाओं की उपस्थिति अपेक्षाकृत कमजोर है। रिपोर्ट ने डिजिटल शिक्षा, छात्रवृत्ति तथा कौशल विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया। इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन साइंसेज एवं स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (2019-21)⁶ द्वारा प्रकाशित NFHS-5 में महिला शिक्षा और स्वास्थ्य के मध्य गहरे संबंध को स्पष्ट किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार शिक्षित मुस्लिम महिलाओं में स्वास्थ्य जागरूकता, परिवार नियोजन तथा बच्चों की शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया। इसके अतिरिक्त अध्ययन ने यह भी संकेत दिया कि जिन परिवारों में महिलाओं की शिक्षा का स्तर अधिक है, वहाँ सामाजिक एवं आर्थिक विकास की संभावनाएँ अधिक मजबूत होती हैं। इस प्रकार महिला शिक्षा को सामाजिक प्रगति का महत्वपूर्ण सूचक माना गया है।

शैक्षिक स्थिति का प्रभाव

भारत में मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति भारतीय समाज की सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक संरचना से गहराई से जुड़ी हुई है। शिक्षा किसी भी समाज के विकास, जागरूकता और सशक्तिकरण का सबसे महत्वपूर्ण साधन मानी जाती है, किंतु भारतीय मुस्लिम महिलाओं के संदर्भ में शिक्षा का स्तर लंबे समय तक अपेक्षाकृत निम्न रहा है। आधुनिक समय में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है, फिर भी मुस्लिम महिलाओं को अनेक प्रकार की सामाजिक, आर्थिक और संस्थागत चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। भारत में मुस्लिम समुदाय देश का सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है, और इस समुदाय की महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का प्रभाव सीधे सामाजिक विकास, महिला सशक्तिकरण तथा राष्ट्रीय प्रगति पर पड़ता है।

वर्तमान स्थिति और आंकड़े

भारत में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा की वर्तमान स्थिति मिश्रित स्वरूप प्रस्तुत करती है। जनगणना 2011 के अनुसार मुस्लिम महिलाओं की साक्षरता दर लगभग 52 प्रतिशत थी, जो राष्ट्रीय महिला साक्षरता दर से कम थी। हालांकि पिछले दो दशकों में इसमें सुधार देखने को मिला है। ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा का स्तर बेहतर पाया गया है। इसके बावजूद उच्च शिक्षा में उनकी भागीदारी अभी भी सीमित है। ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन (AISHE 2020-21) के अनुसार उच्च शिक्षा संस्थानों में मुस्लिम छात्राओं का नामांकन धीरे-धीरे बढ़ रहा है, किंतु अन्य समुदायों की तुलना में उनका Gross Enrollment Ratio (GER) कम है। राष्ट्रीय स्तर पर महिला GER जहाँ लगभग 27 प्रतिशत से अधिक है, वहीं मुस्लिम महिलाओं का GER इससे कम पाया गया। इसका अर्थ है कि उच्च शिक्षा तक पहुँचने वाली मुस्लिम महिलाओं की संख्या अपेक्षाकृत कम है। विद्यालयी शिक्षा में भी मुस्लिम लड़कियों की स्थिति चुनौतीपूर्ण बनी हुई है। प्राथमिक स्तर पर नामांकन बढ़ा है, लेकिन माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर तक पहुँचते-पहुँचते बड़ी संख्या में छात्राएँ विद्यालय छोड़ देती हैं। ड्रॉपआउट दर का मुख्य कारण गरीबी, प्रारंभिक विवाह, घरेलू कार्यों का बोझ तथा सामाजिक प्रतिबंध हैं। कई मुस्लिम परिवारों में आर्थिक कठिनाइयों के कारण लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता नहीं दी जाती। परिणामस्वरूप अनेक छात्राएँ आठवीं या दसवीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ देती हैं। NFHS-5 के आंकड़े बताते हैं कि

शिक्षा और स्वास्थ्य के बीच गहरा संबंध है। जिन मुस्लिम महिलाओं ने माध्यमिक या उच्च शिक्षा प्राप्त की है, उनमें स्वास्थ्य जागरूकता, परिवार नियोजन तथा रोजगार के अवसर अधिक पाए गए हैं। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा केवल ज्ञान का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का आधार भी है।

सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौतियां

- मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा के सामने सबसे बड़ी बाधाओं में सामाजिक और सांस्कृतिक कारक प्रमुख हैं। भारतीय समाज में लंबे समय से पितृसत्तात्मक व्यवस्था विद्यमान रही है, जिसका प्रभाव मुस्लिम समुदाय पर भी दिखाई देता है। कई परिवारों में लड़कियों की शिक्षा को विवाह तक सीमित माना जाता है। अभिभावकों का मानना होता है कि अधिक शिक्षा प्राप्त करने से विवाह में कठिनाई हो सकती है या लड़कियाँ पारंपरिक भूमिकाओं से दूर हो सकती हैं।
- पर्दा प्रथा और रूढ़िवादी सोच भी कई क्षेत्रों में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा में अवरोध उत्पन्न करती है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों को विद्यालय या कॉलेज भेजने में परिवार संकोच महसूस करता है। सह-शिक्षा वाले संस्थानों में पढ़ाई को लेकर भी कई परिवारों में असहजता पाई जाती है। इसके अतिरिक्त महिला शिक्षकों की कमी तथा सुरक्षित परिवहन की अनुपलब्धता भी छात्राओं की शिक्षा को प्रभावित करती है।
- प्रारंभिक विवाह मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा में एक महत्वपूर्ण बाधा है। अनेक परिवार आर्थिक और सामाजिक कारणों से लड़कियों का विवाह कम उम्र में कर देते हैं, जिससे उनकी पढ़ाई अधूरी रह जाती है। विवाह के बाद घरेलू जिम्मेदारियों के कारण अधिकांश महिलाएँ शिक्षा जारी नहीं रख पातीं।
- धार्मिक शिक्षा और आधुनिक शिक्षा के बीच संतुलन का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। कई मुस्लिम परिवार धार्मिक शिक्षा को प्राथमिकता देते हैं, जबकि आधुनिक शिक्षा की ओर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है। हालांकि वर्तमान समय में यह प्रवृत्ति धीरे-धीरे बदल रही है और अनेक मुस्लिम परिवार अपनी बेटियों को आधुनिक शिक्षा के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

आर्थिक चुनौतियां

- गरीबी मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है। सच्चर समिति रिपोर्ट (2006) के अनुसार मुस्लिम समुदाय का बड़ा हिस्सा आर्थिक रूप से कमजोर है। आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण परिवार लड़कियों की शिक्षा पर कम खर्च करते हैं। जब परिवार के सीमित संसाधनों में चुनाव करना होता है, तब अक्सर लड़कों की शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है।
- विद्यालयी खर्च, किताबें, यूनिफॉर्म, परिवहन तथा डिजिटल संसाधनों की कमी भी शिक्षा में बाधा उत्पन्न करती है। कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा का महत्व बढ़ा, किंतु गरीब मुस्लिम परिवारों में स्मार्टफोन और इंटरनेट की कमी के कारण अनेक छात्राएँ पढ़ाई से वंचित रह गईं। इससे शैक्षिक असमानता और अधिक बढ़ी।
- रोजगार के अवसरों की कमी भी शिक्षा के प्रति उत्साह को प्रभावित करती है। कई परिवारों का मानना है कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी रोजगार सुनिश्चित नहीं है, इसलिए वे लड़कियों की पढ़ाई में अधिक निवेश नहीं करना चाहते। यह मानसिकता मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक प्रगति को सीमित करती है।

संस्थागत चुनौतियां

- संस्थागत स्तर पर भी मुस्लिम महिलाओं को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कई मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण विद्यालयों और कॉलेजों की कमी है। सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों की अनुपस्थिति, खराब आधारभूत संरचना तथा शिक्षण की निम्न गुणवत्ता शिक्षा के स्तर को प्रभावित करती है।
- उच्च शिक्षा संस्थानों में मुस्लिम महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम होने का एक कारण मार्गदर्शन और परामर्श की कमी भी है। ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं को करियर संबंधी जानकारी और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के अवसर कम मिलते हैं। इसके अतिरिक्त छात्रवृत्ति योजनाओं की जानकारी का अभाव तथा आवेदन प्रक्रिया की जटिलता भी लाभ प्राप्त करने में बाधा बनती है।
- शिक्षा व्यवस्था में भेदभाव और सामाजिक पूर्वाग्रह भी कुछ मामलों में मुस्लिम छात्राओं को प्रभावित करते हैं। कई अध्ययनों में पाया गया है कि मुस्लिम छात्राओं को कभी-कभी सामाजिक पहचान के कारण भेदभाव का सामना करना पड़ता है, जिससे उनमें आत्मविश्वास की कमी उत्पन्न होती है।

तुलनात्मक विश्लेषण

यदि अन्य समुदायों की तुलना की जाए, तो मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्गों की महिलाओं के समान या कई मामलों में उनसे भी कमजोर पाई गई है। हिंदू और ईसाई समुदायों की महिलाओं की तुलना में मुस्लिम महिलाओं की उच्च शिक्षा में भागीदारी कम है।

ईसाई समुदाय में महिला शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत अधिक है क्योंकि वहाँ मिशनरी संस्थानों और सामाजिक जागरूकता का प्रभाव देखा जाता है। वहीं हिंदू समुदाय में शहरी मध्यम वर्ग की महिलाओं में उच्च शिक्षा की प्रवृत्ति अधिक विकसित हुई है। मुस्लिम महिलाओं में यह प्रक्रिया अभी धीरे-धीरे विकसित हो रही है।

हालांकि कुछ राज्यों में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति बेहतर भी पाई गई है। केरल इसका प्रमुख उदाहरण है, जहाँ मुस्लिम महिलाओं की साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से अधिक है। इसका कारण राज्य की मजबूत शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक जागरूकता तथा महिला शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है। इसके विपरीत बिहार, उत्तर प्रदेश और झारखंड जैसे राज्यों में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा की स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर है।

सरकारी प्रयास और उनका प्रभाव

भारत सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकारों ने मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएँ शुरू की हैं। सच्चर समिति रिपोर्ट के बाद अल्पसंख्यक समुदायों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। प्री-मैट्रिक, पोस्ट-मैट्रिक तथा मेरिट-कम-मीन्स छात्रवृत्ति योजनाएँ मुस्लिम छात्राओं को आर्थिक सहायता प्रदान करती हैं।

Ministry of Minority Affairs द्वारा संचालित “बेगम हजरत महल छात्रवृत्ति योजना” विशेष रूप से अल्पसंख्यक लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई थी। इसके अतिरिक्त “नई रोशनी” और “नई मंजिल” जैसी योजनाओं के माध्यम से मुस्लिम महिलाओं को शिक्षा और कौशल विकास से जोड़ने का प्रयास किया गया।

Ministry of Education की समग्र शिक्षा अभियान योजना के अंतर्गत विद्यालयी शिक्षा में बालिकाओं के नामांकन और उपस्थिति को बढ़ाने पर बल दिया गया है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान ने भी मुस्लिम समुदाय सहित सभी वर्गों में लड़कियों की शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने में योगदान दिया है।

सरकारी प्रयासों के बावजूद योजनाओं का प्रभाव सभी क्षेत्रों में समान रूप से नहीं दिखाई देता। कई ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में योजनाओं की जानकारी लोगों तक नहीं पहुँच पाती। भ्रष्टाचार, प्रशासनिक देरी तथा जागरूकता की कमी के कारण अनेक छात्राएँ इन योजनाओं का लाभ नहीं उठा पातीं। फिर भी यह कहा जा सकता है कि सरकारी योजनाओं ने मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा में सकारात्मक परिवर्तन की शुरुआत की है।

निष्कर्ष

भारत में मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति पिछले कुछ दशकों में धीरे-धीरे बेहतर हुई है, किंतु अभी भी अनेक सामाजिक, आर्थिक और संस्थागत चुनौतियाँ उनके समग्र शैक्षिक विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं। शिक्षा किसी भी समाज के प्रगति और सशक्तिकरण का आधार होती है, इसलिए मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा केवल एक समुदाय विशेष का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विकास और सामाजिक समानता का महत्वपूर्ण विषय है। सच्चर समिति रिपोर्ट, जनगणना, AISHE तथा NFHS-5 जैसे विभिन्न अध्ययनों और रिपोर्टों से यह स्पष्ट होता है कि मुस्लिम महिलाओं की साक्षरता दर, उच्च शिक्षा में भागीदारी तथा रोजगार से जुड़ाव में सुधार हुआ है, फिर भी उनकी स्थिति राष्ट्रीय औसत से पीछे बनी हुई है। गरीबी, लैंगिक भेदभाव, प्रारंभिक विवाह, सामाजिक रूढ़िवादिता, गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक संस्थानों की कमी तथा जागरूकता का अभाव मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा में प्रमुख बाधाएँ हैं। इसके बावजूद वर्तमान समय में समुदाय के भीतर शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच विकसित हो रही है। अनेक मुस्लिम परिवार अब अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। सरकारी छात्रवृत्ति योजनाएँ, कौशल विकास कार्यक्रम तथा महिला शिक्षा को बढ़ावा देने वाली नीतियाँ भी इस दिशा में सहायक सिद्ध हुई हैं।

समाज और शैक्षिक संस्थान मिलकर मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करें। विद्यालयी आधारभूत संरचना में सुधार, सुरक्षित परिवहन, महिला शिक्षकों की नियुक्ति, डिजिटल शिक्षा की उपलब्धता तथा लैंगिक समानता पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। शिक्षित मुस्लिम महिलाएँ न केवल अपने परिवार और समुदाय को सशक्त बनाएँगी, बल्कि समावेशी, प्रगतिशील और लोकतांत्रिक भारत के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी।

संदर्भ सूची

1. बानो, एफ. (2017). “भारत में मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति।” *OSR Journal of Humanities and Social Science*, 22(7), 32–38.
2. हुसैन, एम. एवं अन्य। (2018). “भारत में मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति।” *Scholars Journal of Arts, Humanities and Social Sciences*, 6(4), 789–795.
3. मलिक, ए. (2023). “मुस्लिम महिलाओं के शैक्षिक अनुभव: चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ।” *Journal of Social Inclusion Studies*, 9(1), 55–70.
4. भारत सरकार. (2006). *भारत में मुस्लिम समुदाय की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति पर उच्च स्तरीय समिति (सच्चर समिति) की रिपोर्ट*, नई दिल्ली: भारत सरकार.

5. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020-21). ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन (AISHE) रिपोर्ट, नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय.
6. इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन साइंसेज एवं स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (2019-21), राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (NFHS-5), मुंबई: IPS.